मॉड्यूल

विद्यालयों के समग्र विकास में समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करने में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान कोरबा (छ.ग.)

National Institute of Educational Planning and Administration

National Centre for School Leadership — NCSL — Every Child Learns Every School Excels

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

विद्यालय नेतृत्व अकादमी

राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़

रायपुर – 492007

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

श्री राजेश सिंह राणा (आईएएस)

संचालक

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

डॉ योगेश शिवहरे

अतिरिक्त संचालक

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

श्रीमती पुष्पा किस्पोट्टा

उपसंचालक

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

एवं

प्राचार्य

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कोरबा

समन्वयक श्री डी.दर्शन

नोडल अधिकारी स्कूल लीडरशिप अकादमी

एससीईआरटी, छत्तीसगढ़, रायपुर

माड्यूल लेखन समन्वयन

श्री गौरव शर्मा

व्याख्याता

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कोरबा

विद्यालयों के समग्र विकास में समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करने में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

लेखक

कृष्ण कुमार चन्द्रा
उच्च वर्ग शिक्षक
शा.पू.मा.विद्यालय सोनपुरी
जिला-कोरबा, छ.ग.

क्षेत्र:- छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले के विद्यालय प्रमुखों का नेतृत्व।

कीवर्ड:- सामुदायिक सहभागिता, संसाधनों का विकास, विद्यार्थियों का नामांकन, एवं ठहराव, शैक्षिक गुणवत्ता।

उद्देश्य:-

1. सामुदायिक सहभागिता के परिणामस्वरूप विद्यालय में संसाधनों की उपलब्धता को बढ़ा सकेंगे।
2. सामुदायिक सहभागिता के द्वारा विद्यालय में नामांकन, उपस्थिति एवं ठहराव को बनाये रख सकेंगे।
3. सामुदायिक सहभागिता के परिणामस्वरूप विद्यालय में स्वच्छ वातावरण निर्माण को सुनिश्चित कर सकेंगे।
4. सामुदायिक सहभागिता के द्वारा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि कर सकेंगे।
5. विद्यालय के पाठ्येत्तर गतिविधियों में समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित कर छात्रों को लाभान्वित कर सकेंगे।

भूमिका:-

भारत में वैदिक काल से ही शिक्षा के क्षेत्र में समुदाय की सहभागिता रही है, एवं विभिन्न कालों में समुदाय की सहभागिता शिक्षा के समग्र विकास एवं छात्रों की शैक्षिक गुणवत्ता में रही है। है। आधुनिक काल में भी शिक्षा के क्षेत्र में समुदाय की भागीदारी को सुनिश्चित करने हेतु अनेक आयोगों एवं शिक्षा नीतियों में भी समुदाय की सहभागिता को बढ़ाने हेतु कहा गया है। वर्तमान में नई शिक्षा नीति (एनईपी2020) में भी शिक्षा के क्षेत्र में समुदाय की सहभागिता को व्यापक रूप से से सुनिश्चित करने संबंधी नीति बनाई गई है।

एक समुदाय में निर्माण एवं स्थायित्व की दृष्टि से दो या दो से अधिक व्यक्ति, निश्चित भौगोलिक क्षेत्र, सामुदायिक भावना, सामान्य जीवन तथा नियमों आदि तत्वों का होना परम आवश्यक है। समुदाय का क्षेत्र छोटे से छोटा भी हो सकता है और बड़े से बड़ा भी। सामान्यतः समुदाय का क्षेत्र उसके सदस्यों की आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक समानताओं पर निर्भर करता है। अतः एक गाँव, कस्बा, नगर, राष्ट्र एवं विश्व को भी समुदाय की संज्ञा दी जा सकती संक्षेप में एक गाँव, नगर, राष्ट्र अथवा विश्व में दो या दो से अधिक जितने भी व्यक्ति एकता के सूत्र में बंधकर समान उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सामान्य जीवन व्यतीत करते हों, सभी मिलकर एक समुदाय का निर्माण करते हैं।

"इस क्रम में समुदाय बालक की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण, सक्रिय तथा अनौपचारिक साधन साधन है। जिस प्रकार बालक की शिक्षा पर परिवार तथा स्कूल का गहरा प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार समुदाय भी बालक के व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि वह उस समूह के कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेने के योग्य बन जाता है, जिसका वह सदस्य है। इसीलिए यह कहावत अब भी चली आ रही है कि प्रत्येक बालक वैसा ही बन जाता है जैसा कि समुदाय के बड़े लोग उसे बनाना चाहते हैं।"[1]

रिऑर्गेनाइजेशन आफ सेकेंडरी स्कूल रिपोर्ट-"शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के ज्ञान, रुचियों, आदर्शों, आदतों तथा शक्तियों का विकास करना है, जिसके द्वारा उसे अपना उचित स्थान प्राप्त सके तथा वह इस स्थान का सदुपयोग कर स्वयं तथा समाज को उच्च एवं पवित्र उद्देश्यों की ओर ले जाए।"[2]

हम सभी जानते हैं कि विद्यालय समुदाय का एक अभिन्न अंग होता हैऔर विद्यालय में शिक्षार्थी समुदाय से ही आते हैं, फलत: विद्यालयों के समग्र विकास में विद्यालय प्रमुख के साथ-साथ समुदाय की भी सहभागिता होनी चाहिए। शिक्षित समाज के निर्माण में विद्यालय की भूमिका अहम होती है। ज्ञात हो आधुनिक युग में शिक्षा बाल केन्द्रित है और इसे सुनिश्चित करने में शिक्षक और समुदाय दोनों की सहभागिता आवश्यक है।

अनेक अनुसंधानों से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि विद्यालयों में समुदाय की सहभागिता बढ़ने से छात्रों के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं संसाधनों के विकास को बल मिलता है।विभिन्न शोध पत्रों पत्रों में यह पाया गया है कि अभिभावक, परिवार एवं समुदाय की भागीदारी विद्यालय की शिक्षा पूरी करने की स्थिति में अहम भूमिका निभाती है (यूनिसेफ 1992, टालबोट एंड वेरीण्डर 2005, कोले 2007 आदि)

"शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी पर बल देते हुए नेशनल पॉलिसी आफ एजुकेशन 1986 में में शिक्षा के प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी पर जोर दिया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने निर्धारित

किया कि समुदाय, उपयुक्त निकाय एवं समिति के माध्यम से विद्यालय प्रबंधन कार्यक्रमों में सम्मिलित होगा।"[3]

"उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रत्येक बच्चे के लिए जरूरी है और यह तभी संभव है जब अभिभावक तथा समुदाय विद्यालय स्तर पर शिक्षा की योजना एवं प्रशासन में सक्रिय रूप से भाग लें।अभिभावकों की भागीदारी बच्चों की योग्यता एवं क्षमता को और बढ़ा देती है। शिक्षा में समुदाय, परिवार एवं अभिभावकों की भागीदारी न सिर्फ बच्चों के प्रदर्शन को बढ़ाती है, अपितु शिक्षा शिक्षा में वितरण के माध्यमों को भी उन्नत करती है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति समीक्षा 2008)"[4]

एस. एम. डोर्नबुस्क एंड पी. एल. रिटर ने अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि- "छात्र जिनके अभिभावक स्कूल की गतिविधियों में भाग लिए एवं शिक्षकों के संपर्क में रहे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उपलब्धि उनसे अधिक होती है जिनके अभिभावक स्कूलों में न्यूनतम भागीदारी करते हैं।"[5]

एक अच्छे विद्यालय नेतृत्वकर्ता एवं उभरते हुए नेतृत्वकर्ता से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने आप को अपडेट करते रहें। साथ ही साथ वह अपने आस-पास के समुदाय में उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग अपने विद्यालय के शैक्षिक वातावरण निर्माण एवं शैक्षिक गुणवत्ता के लक्ष्य को प्राप्त करने में करें।

यह सर्वविदित है कि हमारे शासकीय विद्यालयों में संसाधनों का सर्वथा अभाव रहता है यहीं यहीं पर एक नवाचारी विद्यालय प्रमुख अपने कुशल नेतृत्व में समुदाय में उपलब्ध शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक संसाधनों को न केवल चिन्हित करता है वरन उन संसाधनों को अपने विद्यालय तक लाने हेतु सार्थक प्रयास भी करता है।

समुदायसेप्राप्तहोसकनेवालेसंसाधन–

मानवीय संसाधन–

सेवानिवृत्त शिक्षक, शिक्षित छात्र, कर्मचारी–अधिकारी, चिकित्सा सेवा के सदस्य, बढ़ाई, लोहार, सुनार, मेसन, कुम्हार, किसान, कलाकार, संगीतकार, योग व्यायाम गुरु आदि।

भौतिकसंसाधन–

कबाड़ से जुगाड़ वाले सामग्री, दरी, टेबल, कुर्सी, प्रायोगिक सामग्री, पेड़–पौधे, बाउंड्रीवाल से संबंधित सामग्री, मंचनिर्माण, माईकसेट,बच्चों के लिए कॉपी, पेन, कम्पास, लाइब्रेरी की किताबें, कंप्यूटर, प्रोजेक्टर आदि हेतु दानदाताओं की खोज।

कोरबा जिला में विद्यालयों के विकास के अंतर्गत सामुदायिक सहभागिता पर आधारित अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसके अनुक्रम में अनेक विद्यालय ऐसे हैं जहाँ के

विद्यालय प्रमुख, प्राचार्य, प्रधान पाठक एवं शिक्षकगण अभिभावक, समुदाय, हितधारकों, शाला प्रबंधन समिति की सहभागिता से विद्यालय के समग्र विकास एवं शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने तथा बच्चों के शैक्षिक गुणवत्ता में अभिवृद्धि हेतु सतत् एवं सक्रिय प्रयास कर रहे हैं। इसी कड़ी में इस जिले के कुछ चुनिंदा शा.उ.मा.विद्यालयों में सुखरीकला, कोथारी, तुमान,उतरदा, मदनपुर, पिपरिया, लाफा, शा.पू.मा.शालाओं में बिंझरा, सोनपुरी, दादरखुर्द, जमनीपाली, आमापाली, शा. प्रा.शालाओं में चाकामार, गढ़कटरा, भटगाँव आदि के क्रियाकलाप जो कि समुदाय की सहभागिता अर्थात भागीदारी भागीदारी पर केंद्रित है। कुछ केस स्टडी प्रस्तुत है-

केस स्टडी 1.

क्या विद्यालय प्रमुख स्वयं के व्यय से भी विद्यालय में संसाधनों का विकास कर सकते हैं?

"मेरा विद्यालय मेरा घर"

जिला मुख्यालय कोरबा से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थितशासकीय प्राथमिक शाला चाकामार जो कि संकुल केंद्र चाकामार। यहाँ अधिकांश लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन जीवनयापन करते हैं विद्यालय एवं बच्चों के पास भौतिक संसाधनों की हमेशा कमी रहती है अधिकांश बच्चे अपने बालकों के साथ काम करने में उनका साथ बताते हैं। जब इस विद्यालय में प्रधान पाठक के रूप में गोकुल प्रसाद मार्बल 2010 में कार्यभार ग्रहण किए तब यहाँ का वातावरण वातावरण एवं परिस्थितियां बहुत वितरित थी। पथरीला क्षेत्र था जहाँ एक पौधा भी लगना मुश्किल मुश्किल था लेकिन इन पथरीली जमीन पर भी अपने फोर्स इरादे के साथ इन्होंने काम करना शुरू किया और हरे पेड़ पौधे लगाने का क्रम प्रारंभ हुआ। धीरे-धीरे यह पौधे बढ़ते गए इनके देखरेख में में यह सकारात्मक शुरुआत रही और इससे विद्यालय नेतृत्व की इच्छा शक्ति बढ़ने लगी। इन गरीब पिछड़े एवं अभावग्रस्त बच्चों के लिए इन्होंने काम करना शुरू किया। विद्यालय में बच्चे आए आए कैसे बालकों को विद्यालय से कैसे जोड़े उन्होंने गाँव के प्रबुद्ध लोगों से संपर्क किया इससे संबंधित योजना भी बनाया फिर भी सफलता नहीं मिल पा रही थी लेकिन एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता नेतृत्वकर्ता के रूप में इन्होंने कभी हार नहीं माना और पालकों से सतत संपर्क बनाए रखे। सबसे पहले इन्होंने बच्चों के लिए विद्यालय भवन को आकर्षक बनवाया प्रिंचरीट वातावरण बनवाया और यह सब कार्य उन्होंने स्वयं के व्यय से किया। साथ ही साथ स्मार्ट क्लास का निर्माण और

कंप्यूटर शिक्षा देना शुरू किया इस बात का बहुत व्यापक असर हुआ बात गाँव तक गई लोगों को लगने लगा कि यह गुरुजी हमारे बच्चों के लिए कुछ करना चाहते हैं क्यों ना हमें भी उनका साथ देना चाहिए और शिक्षक के इस भगीरथ प्रयास में सहयोग करने हेतु अभिभावक सामने आने लगे और पुनः 2018 में शाला विकास योजना तैयार कर शाला प्रबंधन समिति एवं पालक के लगातार बैठक आयोजित कर विद्यालय के वातावरण को पारित करने में उन्होंने खूब मेहनत किया यद्यपि गाँव के लोग गरीब हैं धन से तो मदद नहीं किए परंतु शारीरिक रूप से और मानसिक रूप सेउनका सेउनका जुड़ाव देखते ही बनता है। सामुदायिक सहभागिता से विद्यालय प्रांगण में विद्यादायिनी मां सरस्वती का मंदिर का निर्माण कराया गया जिसमें लोगों का सहयोग प्राप्त हुआ। लोगों में दिखने लगा विद्यालय के प्रति उनकी रुचि जागृत हो गई थी। एक बार पुनः शिक्षक ने अपने स्वयं स्वयं के व्यय से भारत माता की आदमकद मूर्ति का निर्माण भी कराया। कक्षा पहली से पांचवी तक सभी कक्षाओं में स्मार्ट टीवी एवं प्रोजेक्टर लगवाया और विद्यालय को जिले का पहला पूर्ण डिजिटल स्कूल बनाया। बाग बगीचे बनाकर स्वच्छ एवं प्रिंचरीट वातावरण तैयार कर बच्चों के शिक्षा के लिए सकारात्मक वातावरण भी उन्होंने बनाया।गाँव के गरीब बच्चे भी यदि सर्वसुविधा युक्त माहौल दिया जाए तो यह बच्चे भी निजी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों से कम नहीं होंगे। सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों की प्रतिभा भी कभी कम नहीं होती है। शिक्षक ने सभी विद्यालयों में साउंड सभी कक्षाओं में साउंड सिस्टम माय होम थिएटर लगवाया ताकि बच्चों में बोलने की क्षमता का विकास हो। इन्होंने बच्चों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बच्चों के लिए हैंड वॉश पॉइंट सर्व सुविधा युक्त बालक बालिका शौचालय मूत्रालय का निर्माण कराया पक्के अहाता का निर्माण भी कराया। गणित उत्थानके लिए गणित उद्यान का निर्माण कराया बच्चों के लिए झूला जिम पार्ट्स लगवाया ताला के बाहरी वातावरण पर प्रिंटरिच वातावरण तैयार किया ताकि ताकि बच्चे पर बच्चे हर कोने से सीख सकें। उन्होंने विद्यालय की भौतिक सुविधा से लेकर बच्चों की आवश्यकताओं को अपने स्वयं के व्यय से तैयार किया है और आज इनका विद्यालय किसी निजी विद्यालय से कम नहीं है और कोरबा जिला में मॉडल स्कूल के रूप में तैयार है। इनके विद्यालय में ग्रीष्मकालीन अवकाश हो या सामान्य अवकाश रविवार हो या विद्यालय यह अवश्य जाते हैं। यह विद्यालय को अपना तन मन धन से सवारे हैं। इसीलिए यहकहतेहैं कि मेरा विद्यालय मेरा घर है और यहाँ यह भी बताना चाहते हैं कि इन्हें इस सत्र छत्तीसगढ़ राज्यपाल अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

विद्यालय की कुछ झलकियाँ

स्मार्ट क्लास से बच्चों की करा रहे पढ़ाई

Video Link : https://youtu.be/qv-wyR9vAKY

केस स्टडी 2

विद्यालय प्रमुख समुदाय से किस प्रकार की सहभागिता ले सकते हैं-

1.----------

2.----------

3.----------

4.----------

"समुदाय भी बालक के व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि वह उस समूह के कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेने के योग्य बन जाता है जिसका वह सदस्य है[6]।"

विद्यालय का समग्र विकास और शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु समुदाय की सहभागिता लेने के मामले मेंकेस स्टडी क्रमांक 2 प्रस्तुत है-

कोरबा जिला मुख्यालय से लगभग 35 किलोमीटर दूर करतला विकासखंड के कोरबा-सक्ती मार्ग पर स्थित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तुमान आते-जाते राहगीरों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है। यह विद्यालय अपने गतिविधियों और समग्र उन्नति के क्षेत्र में इस इस जिले में अपना उत्कृष्ट स्थान रखता है। ज्ञात हो कि इस विद्यालय में सन् 2008 में प्रमुख के रूप में जब से प्राचार्य पी. पटेल का आगमन हुआ है तब से उन्होंने विद्यालय को एक नए स्वरूप में ढालने और समग्र विकास एवं शैक्षणिक गुणवत्ता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में नवाचारी एवं अभिनव प्रयास किया है। इस कड़ी में सर्वप्रथम उन्होंने स्वयं के व्यय से इस विद्यालय के विशाल भवन एवं विस्तृत मैदान के चारों ओर सीमेंट के पोल और लोहे के फेंसिंग तार तार से बाउंड्री कराया। जिसे उस समुदाय के शरारती तत्वों ने पोल को उखाड़कर और तार को काटकर नुकसान पहुँचाया, तथापिइसके निर्माण हेतु बारंबार प्रयास किया, अंततः सफलता प्राप्त भी किये। इसके बाद उन्होंने स्वयं के व्यय से लगभग 250 केले के पौधे एवं 5000 विविध पौधे विद्यालय में लगाकर कीर्तिमान स्थापित किया। यहाँ हम बताना चाहेंगे, जिस प्रकार पालक अपने बच्चों का परवरिश करते हैं, उसी प्रकार यहाँ के विद्यालय प्रमुख ने अपने इन पौधों का परवरिश अर्थात् देखभाल किया, परिणामस्वरूप यह विद्यालय सुदूर जंगल में खिलकर मुसकाता हुआ एक फूल है जो कि अन्य विद्यालयों के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

सन् 2009 में इस विद्यालय को कोरबा जिले का बेस्ट इको क्लब वाला विद्यालय का पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 2010 में छत्तीसगढ़ राज्य स्तर का सर्वश्रेष्ठ इको क्लब का पुरस्कार हुआ। समुदाय के सहयोग से विद्यार्थियों के लिए 20 खंड का यूरिनल निर्माण कराया, जिसमें ग्राम पंचायत तुमान के सरपंच के द्वारा भी सहयोग प्रदान किया गया, इसमें संस्था के राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के वॉलिंटियर्स के द्वारा भी श्रमदान किया गया। कोरोना काल तो इस विद्यालय के लिए वरदान ही सिद्ध हुआ। शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के सहयोग से स्कूल में एक बड़े कूड़ेदान का निर्माण कराया गया। यह स्कूल क्वारंटाइन सेंटर भी था जहाँ 200 श्रमिक रुकते थे, शासन के आग्रह पर अधूरे यूरिनल कार्य को पूर्ण कराया गया। इस दौरान उन्हें पारिश्रमिक भुगतान विद्यालय प्रमुख द्वारा निजी रूप से प्रदान किया गया। सन् 2020 में गाँव के कुछ जनप्रतिनिधि एवं कोरबा के जिला शिक्षा अधिकारी सतीश कुमार पांडे के मार्गदर्शन में विद्यालय के अंदर रुपए 6 लाख की लागत से एक भव्य मंदिर का निर्माण कराया गया, जिसमें युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानंद, गायत्री माता, सरस्वती माता, भारत माता एवं महतारी की मूर्ति विराजमान हैं। इस निर्माण कार्य में भी समुदाय के योगदान के अलावा एक बड़ी राशि विद्यालय प्रमुख द्वारा स्वयं प्रदान किया गया। यहाँ बच्चों को उनकी पाठ्येतर गतिविधियों के प्रदर्शन हेतु एक भव्य रंगमंच का निर्माण कराया गया है। इस कार्य में भी एनएसएस के वॉलिंटियर्स ने श्रमदान किया। फलतः इनके विद्यालय के चार वॉलिंटियर्स को छत्तीसगढ़ राज्य के बेस्ट वॉलिंटियर्स का अवार्ड भी प्राप्त हुआ है। इनके विद्यालय को छत्तीसगढ़ राज्य स्तरीय बेस्ट

एनएसएस स्कूल का अवार्ड प्राप्त हुआ है। समुदाय के सहयोग से ही विद्यालय में भव्य कुंड का भी निर्माण किया गया है, जहाँ प्रतिदिन नीलकमल के फूल रोज खिले रहते हैं जो बच्चों, शिक्षकों और समुदाय के आगंतुक सदस्यों के मन को आकर्षित करते है। पूरे गाँव में यह विद्यालय विद्यालय अपने तरह का एक अनूठा स्थान है।

ज्ञात हो कि पी.पटेल जब शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बेहरचुँआ में व्याख्याता के के रूप में कार्यरत रहे तब भी समुदाय की सहभागिता से एक बड़े हाल और एक रंगमंच का निर्माण कार्य कराया था तब से लेकर अब तक वे सदैव अपने विद्यालय में एक स्वस्थ एवं वातावरण के निर्माण, पर्यावरण के निर्माण, खेलकूद मैदान आकर्षक विज्ञान प्रयोगशाला, अध्ययन-अध्ययन-अध्यापन कक्ष आदि का निर्माण कर विद्यालय के समग्र विकास और विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। यह भी विदित है कि जिले में इनके विद्यालय के बच्चे उच्च स्तरीय संस्थानों में अध्ययनरत हैं।

शैक्षिकउपलब्धियाँ–

विद्यालय प्रमुख के मार्गदर्शन में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तुमान के अब तक 97 छात्र इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी कर चुके हैं, इनमें से 45 इंजीनियर विभिन्न पदों पर काम कर रहे हैं। 27 बालिकाएँ बीएससी नर्सिंग कर चुकी हैं, वहीं 13 बालिकाएँ एएनएम प्रशिक्षण ले चुकी हैं। पिछले 10 वर्षों से इस विद्यालय का परीक्षाफल 90% से ऊपर आ रहा है। यहाँ से छ. ग. बोर्ड की कक्षा दसवीं के मेरिट लिस्ट में एक छात्र छठवाँ स्थान प्राप्त कर चुका है। 7 विद्यार्थी एन आई टी कर चुके हैं। एक विद्यार्थी हैदराबाद में सीईओ पद पर है। यहाँ के विद्यार्थी फिशरीज ऑफीसर, इंस्पेक्टर आदि पदों पर कार्यरत हैं। अंतर्राष्ट्रीय जम्हूरी स्वीडन 2011 में एक छात्र पार्टिसिपेट कर चुका है, यही छात्र मानवसंसाधन विकास मंत्रालय दिल्ली की ओर से जापान भी जा चुका है। विद्यालय में इस सत्र 2022-23 में 1000 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

विद्यालयकीकुछझलकियाँ

अंतरराष्ट्रीय चित्रकार श्याम दिवाकर का हुआ सम्मान

एक स्कूल सरकारी नाँव के है, असल में एहर हमर गाँव के है

स्कूल के विकास में लोग निभा रहे योगदान

[Video Link :https://youtu.be/Aqw5E3JjY-0](https://youtu.be/Aqw5E3JjY-0)

केस स्टडी 3

कोरबा जिला मुख्यालय से लगभग 30 किमी दूर शासकीय प्राथमिक शाला गढकटरा जो कि कि कोरबा विकासखंड के ख्याति नाम सतरेंगा पर्यटन केन्द्र के पहले ही मुख्य मार्ग पर स्थित है। इस विद्यालय का नाम तब चर्चा में आया जब यहाँ के विद्यालय प्रमुख श्रीकांत सिंह ने अपने नवाचारों व अभिनव प्रयास से अनुकरणीय कार्य करते हुए न केवल विद्यालय के समग्र विकास हेतु हेतु कार्य किया वरन् आर्थिक रूप से पिछड़े समुदाय को अपने विद्यालय से जोड़ने की दिशा में सामुदायिक सहभागिता पर आधारित अद्वितीय, अनुकरणीय और भरोसा बढ़ाने वाला कार्य किया। इनके कार्यों ने यह सिद्ध कर दिया है कि शिक्षक बहुत ही संवेदनशील होते हैं।

उप इकाई

1.समुदाय एक संसाधन के रूप में-

अधिकांशतः विद्यालय नेतृत्व संसाधनों का रोना रोते पाए जाते हैं, जबकि उनके आसपास का समुदाय संसाधनों से भरा पड़ा होता है। हमारा समुदाय मानवीय एवं भौतिक संसाधनों के विशाल भंडार होते हैं। विद्यालय नेतृत्व अपनी अज्ञानता के कारण समुदाय रुपी सर्वोत्तम संसाधन का प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं, वहीं एक कुशल नेतृत्वकर्ता जब समुदाय में उपलब्ध संसाधनों की

पहचान करके अपने विद्यालय की आवश्यकता के अनुरूप एक निश्चित योजना बनाकर समुदाय सतत् संपर्क करके एवं उन्हें प्रेरित करके कार्य करता है तो एक निश्चित समय में अपने की काया पलट कर जाता है।

समुदाय में उपलब्ध संसाधनों की सूची बनाएं-

1.----------

2.----------

3.----------

4.----------

विद्यालय प्रमुख के प्रयास-

1.----------

2.----------

3.----------

4.----------

चुनौती-विद्यालय में किचन गार्डन का निर्माण।

विद्यालय नेतृत्व के रूप में श्रीकांत सिंह ने अपने विद्यालय की माँग के अनुरूप एक किचन गार्डन बनाने के लिए प्रयास किया, परंतु असफलता ही हाथ लगती रही, फ़िर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अपने सोच में परिवर्तन करते हुए उन्होंने समुदाय की भागीदारी बढ़ाने का मन बनाया। समुदाय के लोगों से संपर्क कर उन्हें प्रेरित करके विद्यालय के चारों ओर लकड़ी का खंभा एवं सोशल मीडिया पर अपने मित्रमंडली से सहयोग प्राप्त करके लोहे के तार की जालियाँ लगाकर पेड़ पौधों की सुरक्षा करने पर काम किया। इसके अलावा नवाचार करते हुए पानी वाले प्लास्टिक बोतलों से हर एक पेड़ को गर्मी के दिनों में भी पानी उपलब्ध कराते हुए मरने से बचाया, परिणाम हम सबके सामने हैं। वर्तमान में इनके किचन गार्डन से हरे-हरे साग-सब्जी, विभिन्न तरकारी जैसे भिंडी, बरबट्टी, सेम, लौकी आदि के अलावा केला, पपीता, चीकू अमरूद आदि के पेड़ पेड़ लहलहाने, फूलने और फलने लगे हैं। कहना न होगा कि यहाँ के बच्चों को मध्याह्न भोजन में स्वादिष्ट एवं पौष्टिक भोजन मिल रहा है। इसके ऊपर से यहाँ की हरियाली तो एक बोनस के रूप में हैऔर विद्यालय का वातावरण भी आकर्षक हो गया है, फलत: यहाँ पर बच्चों की उपस्थिति, पालक और समुदाय के सदस्य विद्यालय की ओर स्वत: खींचे चले आते हैं। इसका श्रेय विद्यालय प्रमुख के कुशल नेतृत्व को जाता है। कोरबा जिले में इस विद्यालय का नाम सबके जुबान पर है।

विद्यालयकीकुछझलकियाँ

Video Link :https://youtu.be/v-QH9agrXJk

सत्रवार प्रवेश एवं शैक्षिक उपलब्धि-

सत्र- 2021-22 में एक विद्यार्थी एकलव्य आवासीय विद्यालय हेतु चयनित।

सत्र-2021-22 में 2 विद्यार्थी कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय हेतु चयनित।

उप इकाई

2. विद्यालय प्रमुख का समुदाय के प्रति समर्पण-

विद्यालय प्रमुख समुदाय के निर्धन वर्ग के व्यक्तियों का सहयोग किस प्रकार कर सकते हैं-

1.----------

2.----------

3.----------

4.----------

आइये देखते हैं कि एक विद्यालय प्रमुख ने किस प्रकार से सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम कार्यक्रम को टू वे बनाकर समुदाय को विद्यालय से जोड़ने में सफलता प्राप्त किया, अपने और समुदाय के प्रति इनके योगदान को बिन्दुवार देखते हैं-

1. विद्यालय प्रमुख द्वारा पिछले 5 वर्षों में 700 परिवारों को कंबल वितरित किया गया है।
2. अभाव ग्रस्त और अति पिछड़े 6 परिवारों के अधूरे घरों को पूर्ण कराया गया है।
3. आसपास के 10 गाँवो में लगातार सेवा का कार्य जहाँ नए, पुराने कपड़े, साड़ियाँ और अन्य उपयोगी वस्तुओंका वितरण कराया है।
4. विद्यालय के बच्चों को विगत 5 वर्षों से फ्री स्टेशनरी, जूते-मोजे, टाई-बेल्ट और स्वेटर का वितरण किया है।
5. अन्य विद्यालयों में जहाँ राष्ट्रपति के दत्तकपुत्र कोरवा जनजाति के बच्चे अध्ययनरत हैं उनको प्रत्येक वर्ष नि:शुल्क स्टेशनरी का वितरण करना।
6. विद्यालय को समुदाय से जोड़ना और समुदाय से सहयोग प्राप्त करना। जिसमें अहाता निर्माण, वृक्षारोपण, पालक-बालक खेलकूद, विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम, वोटर अवेयरनेस प्रोग्राम, समूह के सहयोग से किचन बाड़ी का विकास आदि कार्य करते आ रहे हैं।
7. विद्यालय परिसर के बाहर वृहद वृक्षारोपण। इसके लिए समुदाय के सहयोग से ट्री गार्ड प्राप्त कर लगाये गये हैं।
8. अपनी एलआईसी की बीमा पॉलिसी से सत्तर हजार रुपए की लागत से लैपटॉप और प्रोजेक्टर युक्त स्मार्ट क्लास का निर्माण कराया गया है।
9. कक्षा 1 और 2 के बच्चों हेतु एलएडी टीवी युक्त स्मार्ट क्लास का निर्माण कराये हैं। इसके लिए इन्होंने शिक्षा दूत पुरुस्कार में मिली समस्त राशि, समाज सेवी मालती जोशी और स्वयं के बच्चों के सहयोग प्राप्त धनराशि का प्रयोग किया था।
10. सोशल मीडिया के माध्यम से अपने दोस्तों से लगातार सहयोग प्राप्त करते रहते हैं। उनके सहयोग से आलमारी, फिल्टर, ग्रीन मैट, फर्स्ट एड, दरी, गमले, पानी पाइप आदि संसाधन जुटा रखे हैं।
11. समाजसेवी शिक्षक दंपत्ति महुलीकर जी से योगदान स्वरूप ग्रीन बोर्ड, ग्रीन मैट, ड्रम और मैथ्स किट प्राप्त किये हैं।
12. कक्षा 10 की छात्रा के स्कूल जाने के लिए साइकिल प्रदान कर सहयोग किये।

13. कु. ज्योति नाम की बालिका की उच्च शिक्षा के लिए रूपये दस हजार का सहयोग किया।

14. बड़े बच्चे जो उच्च कक्षाओं में अध्ययनरत हैं उनके लिए किताबों की मदद करते हैं।

15. समय-समय पर जरूरत मंद मरीजों के लिए रक्तदान करना।

उप इकाई

3. कोरोनाकाल में सामुदायिक कार्य:-

विद्यालय प्रमुख के रूप में पैंडेमिक काल में निम्नलिखित कार्य किये-

1. कोरोना के बाद लॉकडाउन की शुरुआत से ही 1 अप्रैल 2020 से ही बड़े बच्चों के सहयोग से प्राथमिक शाला के बच्चों की पढ़ाई जारी रखे।

2. 4 अगस्त 2020 से 9 अप्रैल 2021 तक लगातार मोहल्ला क्लास का संचालन किये।

3. बच्चों के लिए ऑफलाइन फिटनेस क्लास का संचालन जारी रखे।

4. सितम्बर 2020 में सामुदायिक सहयोग से लगभग पचास हजार रुपए की लागत से 150 मीटर लम्बा जालीदार अहाता निर्माण कार्य कराये।

5. कोरोनाकाल मे ही एक वर्ष के भीतर स्कूल परिसर में सौ से अधिक फल, फूल, औषधी और सब्जीवाले पौधों का रोपण कराये।

6. मोहल्ला क्लास के बच्चों को निःशुल्क मास्क, सेनेटाइजर एवं साबुन का नियमित अंतराल में वितरण भी कराये।

7. मोहल्ला क्लास के बच्चों को स्वयं के व्यय से निःशुल्क स्टेशनरी प्रदान किये।

8. समुदाय से सहयोग प्राप्त करके 17 गाँवों के 450 से अधिक कोरवा, बिरहोर, पंडो और अन्य जनजातीय जरूरतमंद परिवारों को सामाजिक जिम्मेदारी के तहत लगभग पचास हजार रूपये के कम्बल, साड़ियाँ, स्वेटर, शाल व चप्पलों का वितरण कराया।

9. शंकर कोरवा नाम के राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र के छतविहीन मकान में रूपये नौ हजार से अधिक की राशि का शीट डाले।

10. सामुदायिक सहभागिता से कोरोनाकाल में शाला में पेंटिंग का कार्य कराया।

11. स्कूल के रास्ते को ग्रीन कॉरिडोर बनाने हेतु 80 से अधिक नीम,आम और मुनगा के पौधे तैयार कराये।

12. कोरोनाकाल में पालकों और बच्चों के लिए पालक, बालक खेलउत्सव 2021 का आयोजन और पुरस्कार वितरण कराया।

13. "घर एक पाठशाला" मुहीम के तहत 13 गाँवों के 65 से भी अधिक कक्षा-1 के बच्चों के घरों में चार्ट (हिंदी,अंग्रेजी गणित) लगाये और स्टेशनरी प्रदान कराये।

14. बेसिक गणित पर 200 से अधिक वीडियो तैयार कर बच्चों तक पहुचाये।

15. सत्र 2021-22 में बच्चों के घर-घर जाकर शाला प्रवेश करना, 5वीं पास बच्चों को कस्तूरबा आवासीय विद्यालय में प्रवेश कराये।

केस स्टडी 4

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में विद्यालय प्रमुख किस प्रकार भूमिका निभा सकते हैं

1.----------

2.----------

3.----------

4.----------

सामुदायिक सहभागिता

शासकीय प्राथमिक शाला भटगांव जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर की दूरी पर सुदूर वनांचल क्षेत्र में स्थित है। ग्राम भटगाँव आदिवासी बाहुल्य गाँव है। यह गाँव कोरबा विकासखंड के ग्राम पंचायत चुईया में स्थित है। शासकीय प्राथमिक शाला भटगाँव में कक्षा 1 से 5 तक कक्षाओं में 33 छात्र और 32 छात्राएँ कुल मिलाकर 65 छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत हैं एवं वर्तमान में 2 शिक्षक पदस्थ हैं।

शासकीय प्राथमिक शाला सामान्य स्कूलों के जैसी थी शिक्षकों के प्रयास से समुदाय के लोग शाला शाला से जुड़ने लगे और सामुदायिक सहभागिता बढ़ती गई, जिसके परिणामस्वरूप आज शासकीय प्राथमिक शाला भटगाँव को ब्लॉक जिला एवं राज्य में उत्कृष्ट विद्यालय के रूप में जाना जाता है।

चुनौतियाँ

1.बच्चों का नियमित रूप से स्कूल आना।

2. बच्चों को कुपोषण मुक्त बनाना।

3.बच्चों को नवीन तकनीक से जोड़कर शिक्षा प्रदान करना।

4. बच्चों को विषय वार कापी उपलब्ध कराना।

5.प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कराना।

6. बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना।

चुनौतियों का सामना करने के विद्यालय प्रमुख द्वारा किए गए प्रयास....

स्कूल में ठहराव एवं उनके नियमित रूप से स्कूल आने को लेकर शिक्षकों ने बच्चों के पालकों से घर-घर जाकर संपर्क किया और उन्हें शिक्षा एवं पढ़ाई के महत्व को भलीभाँति बताया गया और उन से यह आग्रह किया गया कि प्रतिदिन अपने बच्चे को विद्यालय अवश्य भेजें बल्कि आपके पास समय हो तो उनके उन्हें पहुँचाने भी आएँ और लेने आएँ। सतत् प्रयास का प्रतिफल है कि समुदाय के लोग विद्यालय से जुड़ रहे हैं।

"जब बच्चा रहेगा स्वस्थ तो उसकी पढ़ाई होगी जबरदस्त।" इस उद्देश्य को लेकर शिक्षक, पालक, पालक, समुदाय और एनजीओ के सहयोग से पिछले 4 वर्षों से प्रत्येक शनिवार के दिन मध्यान्ह भोजन के पश्चात बच्चों को पौष्टिक फल खिलाया जाता है। जब से बच्चे मौसमी फल का सेवन कर रहे हैं तब से बच्चे तंदुरुस्त और स्वस्थ दिख रहे हैं। यह प्रदेश का पहला स्कूल है जहाँ जन समुदाय के सहयोग से हर शनिवार को मध्यान्ह भोजन के पश्चात पौष्टिक फल खिलाया जाता

शिक्षक, पालक एवं समुदाय ने मिलकर आज से 5 वर्ष पहले डिजिटल स्मार्ट कक्षा की शुरुआत की जहाँ बच्चे ऑडियो वीडियो विजुअल माध्यम से अपने पाठ की पढ़ाई करते हैं। जब से से हमने स्कूल का डिजिटलीकरण किया है, तब से बच्चे प्रतिदिन रुचि लेकर स्कूल आते हैं और उनकी सीखने की गति में तेजी आई है। यहाँ तक की छुट्टी के बाद भी बच्चे घर नहीं जाते। गाँव गाँव वालों ने यह भी बताया कि रविवार के दिन भी बच्चे स्कूल के आसपास खेलते रहते हैं कि कब स्कूल खुले तो पढ़ने को जाएँ। कोरबा जिले का प्रथम डिजिटल स्मार्ट स्कूल होने का गौरव प्राप्त है।

शिक्षा विभाग द्वारा हर वर्ष बच्चों को नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक प्रदान की जाती है परंतु इन बच्चों के पास हमने देखा कि विषयवार कॉपियों का अभाव रहता है। पालक चाहकर भी उनके लिए लिए कापी की व्यवस्था नहीं कर पाते हैं। इस स्थिति को देखते हुए शाला प्रबंध समिति शिक्षक ने ने एक योजना बनाई इसके तहत हमारे छत्तीसगढ़ का पारंपरिक प्रसिद्ध त्योहार छेरछेरा (दान के दिन स्कूल के शिक्षक शाला प्रबंध समिति के सदस्य और गाँव के गणमान्य नागरिक मिलकर घर-घर छेरछेरा माँगने जाते हैं और छेरछेरा के रूप में प्राप्त अनाज को बेचकर सभी बच्चों के लिए हर विषय की कॉपी खरीद कर देते हैं। इस माध्यम से हम हर वर्ष बच्चों को काफी उपलब्ध कराते हैं।

"पढ़ेगी नारी विकास गढ़ेगी" इस उद्देश्य को लेकर बालिका शिक्षा पर विशेष रुप से ध्यान दिया जा जा रहा है । पाँचवी पास सभी बालिकाओं को हर वर्ष कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय में दाखिला कराया जाता है ताकि ये बालिकाएँ अच्छे माहौल में इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई पूरी कर सकें। शिक्षकों एवं समुदाय ने मिलकर अब तक 20 छात्राओं को कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय कोरबा में प्रवेश दिलाया है।

प्राथमिक शाला भटगाँव के पाँचवी में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को प्रतियोगी प्रवेश परीक्षा नवोदय विद्यालय एवं एकलव्य विद्यालय में प्रवेश हेतु शिक्षकों एवं गाँव के पढ़े-लिखे युवाओं द्वारा तैयारी कराई जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप हर साल बच्चे चयनित होते हैं। 4 बच्चे नवोदय विद्यालय में चयनित हो चुके हैं और 5 बच्चे एकलव्य आवासीय विद्यालय में चयनित हो चुके हैं।इन्हें इस सत्र छत्तीसगढ़ राज्यपाल अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

विद्यालयकीकुछझलकियाँ

घर-घर जाकर बुलबुल ने कहा घर-आंगन में फहरायें तिरंगा

कोरबा, 10 अगस्त (देशबन्धु)। आजादी का अमृत महोत्सव हर घर लहराएगा तिरंगा अभियान के अंतर्गत वनांचल स्थित शासकीय प्राथमिक शाला भटगांव में संचालित स्काउट गाइड कब बुलबुल के छात्र-छात्राओं ने घर-घर जाकर ग्रामवासियों से अपने घर-आंगन में तिरंगा फहराने को अपील की। स्कूल के प्रभारी प्रधान पाठक नोहर चन्द्रा के निर्देशन में घर-घर तिरंगा फहराने अपील की गई। ग्रामीणों को बताया गया कि

बच्चों को प्रतिदिन स्कूल भेजना माता-पिता का दायित्व : शिवराज

सूदूर वनांचल स्थित शासकीय प्राथमिक शाला भटगांव संकुल केंद्र चुईया विकासखंड कोरबा में शाला प्रवेश उत्सव मनाया गया। शाला प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शिवराज सिंह कंवर सरपंच ग्राम पंचायत चुईया रहे। उन्होंने पालकगण को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों को स्कूल भेजना हर माता-पिता का कर्तव्य है क्योंकि शिक्षा प्राप्त करना बच्चों का अधिकार है और शासन ने गांव गांव में स्कूल खोलने के साथ-साथ बच्चों को निशुल्क गणवेश पाठ्य पुस्तक छात्रवृत्ति आदि तमाम प्रकार की सुविधाएं देती है तो हमें भी बच्चों को शिक्षित करने के लिए योग्य नागरिक बनाने के लिए अपनी जिम्मेदारी निभाना होगा। शाला के प्रधान पाठक नोहर चंद्रा ने बताया कि शासन के निर्देशानुसार 16 जून को स्कूल खोला गया। स्कूल का पर खुलते ही बच्चों के चेहरे खिल उठे। बच्चों को तिलक लगाकर एवं मिठाई खिलाकर शाला प्रवेश कराया गया तथा सभी बच्चों को शासन से प्राप्त

भटगांव स्कूल में मनाया गया बाल दिवस

कोरबा, 15 नवंबर (देशबन्धु)। वनांचल स्थित शासकीय प्राथमिक शाला भटगांव में बाल दिवस धूमधाम से मनाया गया। स्कूल में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ-साथ बच्चे एवं शिक्षक पंडित जवाहरलाल नेहरु बने। जवाहर लाल नेहरु बनकर बच्चे बहुत ही उत्साहित लग रहे थे और एक दूसरे को मैं भी जवाहर कह रहे थे। इस अवसर पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं सहित शाला के प्रधान पाठक नोहर चन्द्रा, शिक्षक शंकरलाल किरण, आंगनबाड़ी

समेकन-

उपरोक्त केस स्टडी से हम पाते हैं कि विद्यालय और समुदाय की सहभागिता के मध्य अन्योन्याश्रित संबंध होता है। विद्यालय प्रमुख, विद्यालय के सम्मुख आने वाली चुनौतियों को स्वीकार करके समुदाय के सदस्यों, पालकों, विभिन्न हित धारकों, जनप्रतिनिधियों, विशेषज्ञों से सतत् सतत् संपर्क करके शाला प्रबंधन समिति का गठन करता है एवं अपने विद्यालय के लिए विद्यालय विकास योजना बनाकर क्रमिक रूप से समुदाय की सहभागिता बढ़ाने की दिशा में कार्य करता है, तब विद्यालय के समग्र विकास, संसाधनों की उपलब्धता, विद्यार्थियों का नामांकन, उपस्थिति, ठहराव एवं शैक्षिक गुणवत्ता में सुधारात्मक प्रवृत्ति देखने को मिलती है। उपरोक्त अध्ययनों से छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में विद्यालय प्रमुख एवं समुदाय की सहभागिता के अपेक्षित परिणाम परिलक्षित हो रहे हैं। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि एक विद्यालय प्रमुख को समुदाय की सहभागिता बढ़ाने की दिशा में सोच बनाना और कार्य करना विद्यार्थी और विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए सार्थक कदम होगा।

केस स्टडी 3 के माध्यम से एक नई बात देखने को मिलती है, जिसमें विद्यालय प्रमुख समुदाय के प्रति सहभागिता निभा रहे हैं। यह उदीयमान भारत के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि विद्यालय एवं समुदाय एक दूसरे के पूरक हैं। यह एक नवाचारी कदम है, जिसका स्वागत किया जाना उचित प्रतीत होता है।

संदर्भ

1. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत- एन. आर. स्वरूप सक्सेना, पृष्ठ संख्या- 6-7, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. रिऑर्गेनाइजेशन आफ सेकेंडरी स्कूल रिपोर्ट
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986.
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति समीक्षा 2008.
5. Dornbusch, S.M., & Ritter P.L. "Parents of High School Students: A Neglected Resources, Educational Horizons66 (1988) 75-77.6
6. http://hi.vikaspedia.in>education
7. Google search.